AIR FORCE SCHOOL BAGDOGRA

SUBJECT – HINDI **SESSION -2020-21** **CLASS- V**

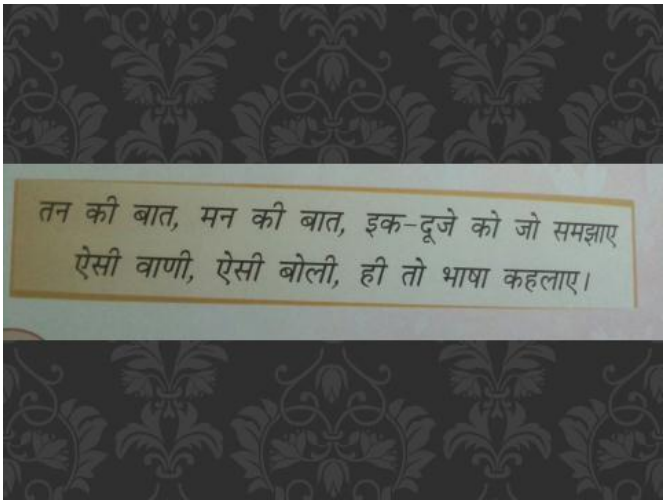

1. **मौखिक भाषा**— भाषा के इस रूप में हम मुख से बोलकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरे लोग सुनकर समझते हैं।

ऊपर दिए गए चित्रों में एक बच्चा भाषण देकर अपनी बात कह रहा है। दो बच्चे टेलीफोन पर बात करके विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। ये भाषा के मौखिक रूप हैं।

* रेडियो सुनना, कविता-पाठ (Recitation), वाद-विवाद (Debate), बातें करना आदि मौखिक भाषा के उदाहरण हैं।

2. **लिखित भाषा**— भाषा के इस रूप में हम लिखकर अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरे पढ़कर उसे समझते हैं।

ऊपर दिए गए चित्रों में एक बच्चा पत्र लिख रहा है और दो बच्चे बगीचे के बाहर लगे बोर्ड को पढ़ रहे हैं। यहाँ लिखकर और पढ़कर विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है। अतः ये भाषा के लिखित रूप हैं।

* व्हाट्सएप, ई-मेल, पत्र-लेखन, लघु संदेश सेवा (एस.एम.एस.) आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

अलग-अलग भाषाएँ

एक अनुमान के अनुसार संसार के अलग-अलग देशों में करीब 6500 भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। हमारे देश में आधिकारिक रूप से करीब 22 भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में बोली जानेवाली कुछ भाषाएँ—

पंजाब	—	पंजाबी	असम	—	असमी
गुजरात	—	गुजराती	मणिपुर	—	मणिपुरी
महाराष्ट्र	—	मराठी	कश्मीर	—	कश्मीरी, डोगरी
तमिलनाडु	—	तमिल	केरल	—	मलयालम
ओडिशा	—	ओड़िआ	आंध्र प्रदेश	—	तेलुगु
कर्नाटक	—	कन्नड़	बिहार	—	मैथिली, भोजपुरी, हिंदी
उत्तर प्रदेश	—	हिंदी	गोआ	—	कोंकणी

विदेशों में बोली जानेवाली कुछ भाषाएँ—

अमेरिका	—	अंग्रेज़ी	जापान	—	जापानी
इंग्लैंड	—	अंग्रेज़ी	पाकिस्तान	—	उर्दू
जर्मनी	—	जर्मन	फ्रांस	—	फ्रेंच
चीन	—	चीनी/मंदारिन	स्पेन	—	स्पेनिश

भाषा	अक्षर	लिपि
हिंदी, संस्कृत, मराठी, गुजराती	अ, आ, इ	देवनागरी
बांगला	অ আ ই	बंगाली
पंजाबी	ੳ ਅ ੲ	गुरुमुखी
उर्दू	ا ب پ	फ़ारसी
स्पेनिश, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन	A B C	रोमन
चीनी	女 氣 安	हांजी

2

वर्ण-विचार
Orthography

भाषा की सबसे छोटी इकाई, पहचानो तुम मुझको भाई।
टुकड़े मेरे हो नहीं सकते, वर्ण या अक्षर नाम है भाई।

भाषा की सबसे छोटी इकाई या ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, **वर्ण** कहलाती है।

वर्ण के भेद

हिंदी भाषा में वर्ण के दो भेद हैं–

1. स्वर 2. व्यंजन

स्वर

जिन वर्णों को बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण या ध्वनि की सहायता नहीं लेनी पड़ती, उन्हें स्वर (Vowel) कहते हैं। स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। हिंदी भाषा में कुल 11 स्वर हैं।

अ आ इ ई उ ऊ
ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन

जो वर्ण स्वर की सहायता से बोले जाते हैं और जिनके उच्चारण में हवा मुँह में कहीं न कहीं टकराकर बाहर निकलती है, वे व्यंजन कहलाते हैं।

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण ड़ ढ़
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	क्ष त्र ज्ञ श्र

◆ ऑ की तरह ज़ और फ़ भी आगत ध्वनियाँ हैं। ये अरबी-फ़ारसी भाषा से ली गई हैं।

संयुक्त व्यंजन

क्ष, त्र, ज्ञ और श्र— इन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं क्योंकि ये दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं; जैसे—

क्ष = क् + ष   त्र = त् + र   ज्ञ = ज् + ञ   श्र = श् + र

कक्षा   पत्र   ज्ञानी   श्रमिक

स्वरों के चिह्नों को मात्राएँ कहते हैं।

स्वरों के चिह्नों को मात्राएँ कहते हैं।

हिंदी में अ को छोड़कर बाकी सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं।

स्वर	मात्रा	व्यंजन मात्रा के साथ	शब्द
अ	कोई मात्रा नहीं	प् + अ = प	पल, पकड़
आ	ा	र् + आ = रा	रात, राजा
इ	ि	ग् + इ = गि	गिन, गिलास
ई	ी	च् + ई = ची	चील, चीता
उ	ु	स् + उ = सु	सुर, सुराही
ऊ	ू	ज् + ऊ = जू	जूता, जूस
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ	कृपा, कृषक
ए	े	म् + ए = मे	मेल, मेरा
ऐ	ै	फ् + ऐ = फै	फैलना, फैसला
ओ	ो	छ् + ओ = छो	छोटा, छोड़ना
औ	ौ	द् + औ = दौ	दौड़, दौलत

क्ष, त्र, ज्ञ और श्र के अतिरिक्त भी हम दो व्यंजनों को जोड़कर संयुक्त व्यंजन या संयुक्ताक्षर बना सकते हैं। इन्हें बनाने के लिए पहला व्यंजन स्वर के बिना और दूसरा व्यंजन स्वर के साथ आता है; जैसे—

च् + च = च्च → बच्चा सच्चा कच्चा खच्चर
च् + छ = च्छ → अच्छा लच्छा मच्छर स्वच्छ
क् + क = क्क → पक्का मक्की चक्की धक्का
स् + त = स्त → बस्ता सस्ता मस्त दोस्त
ल् + ल = ल्ल → बिल्ली दिल्ली गुल्लक बल्ला
ट् + ट = ट्ट → मिट्टी पट्टी खट्टा बट्टा
क् + ख = क्ख → मक्खी मक्खन अक्खड़ भुक्खड़
न् + य = न्य → अन्य वन्य धन्य न्याय
प् + य = प्य → प्यार प्यास प्याज प्यारा
स् + व = स्व → स्वर स्वयं स्वस्थ स्वदेश

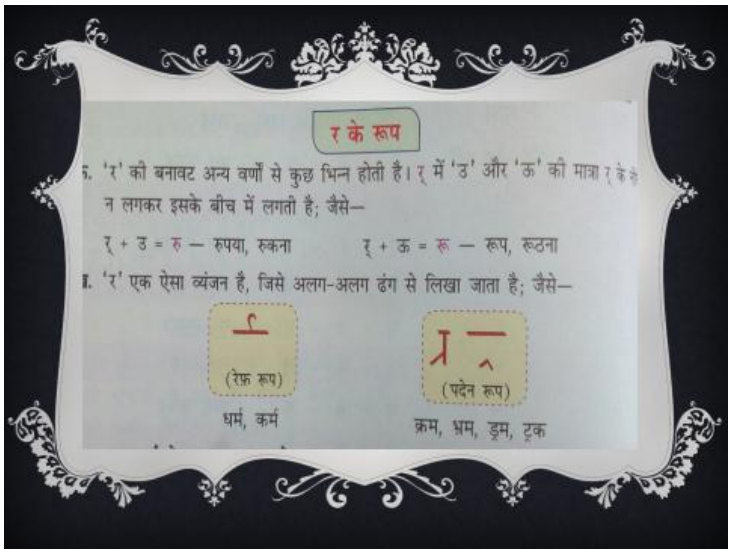
र के रूप
5. 'र' की बनावट अन्य वर्णों से कुछ भिन्न होती है। र् में 'उ' और 'ऊ' की मात्रा र् के
न लगकर इसके बीच में लगती है; जैसे–
र् + उ = रु — रुपया, रुकना
र् + ऊ = रू — रूप, रूठना
6. 'र' एक ऐसा व्यंजन है, जिसे अलग-अलग ढंग से लिखा जाता है; जैसे–
(रेफ़ रूप)
धर्म, कर्म
(पदेन रूप)
क्रम, भ्रम, ड्रम, ट्रक

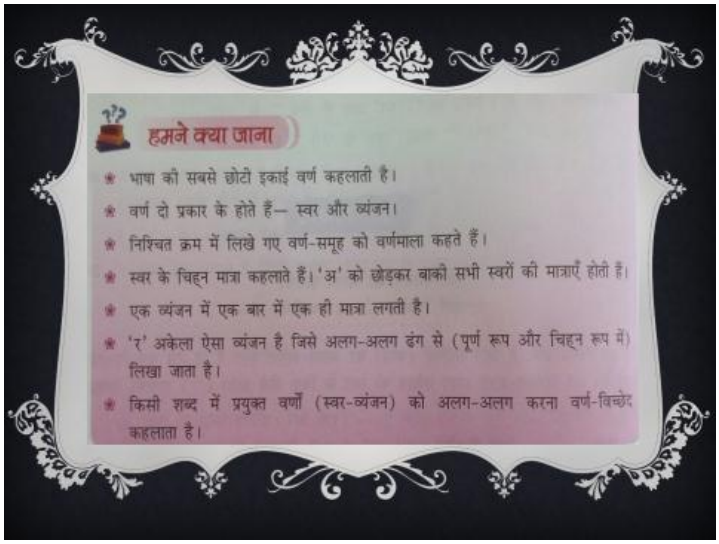
हमने क्या जाना
भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है।
वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर और व्यंजन।
निश्चित क्रम में लिखे गए वर्ण-समूह को वर्णमाला कहते हैं।
स्वर के चिह्न मात्रा कहलाते हैं। 'अ' को छोड़कर बाकी सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं।
एक व्यंजन में एक बार में एक ही मात्रा लगती है।
'र' अकेला ऐसा व्यंजन है जिसे अलग-अलग ढंग से (पूर्ण रूप और चिह्न रूप में) लिखा जाता है।
किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों (स्वर-व्यंजन) को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

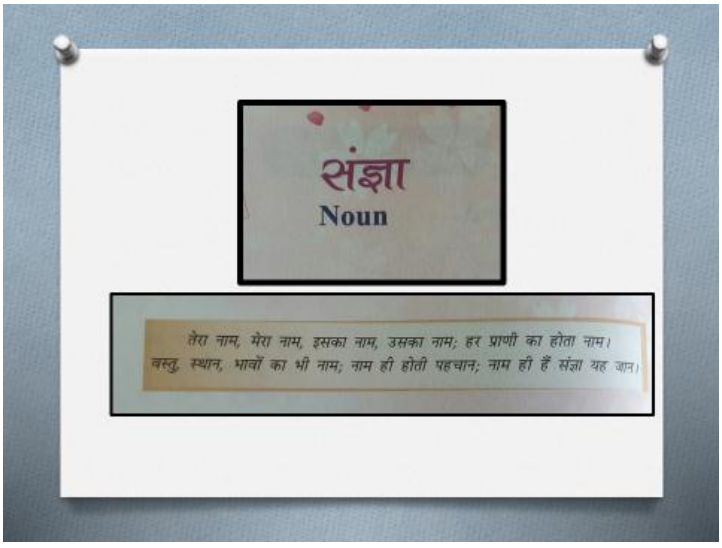
संज्ञा
Noun
तेरा नाम, मेरा नाम, इसका नाम, उसका नाम; हर प्राणी का होता नाम।
वस्तु, स्थान, भावों का भी नाम; नाम ही होती पहचान; नाम ही हैं संज्ञा यह जान।

व्यक्ति/प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम बतानेवाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के कुछ उदाहरण—

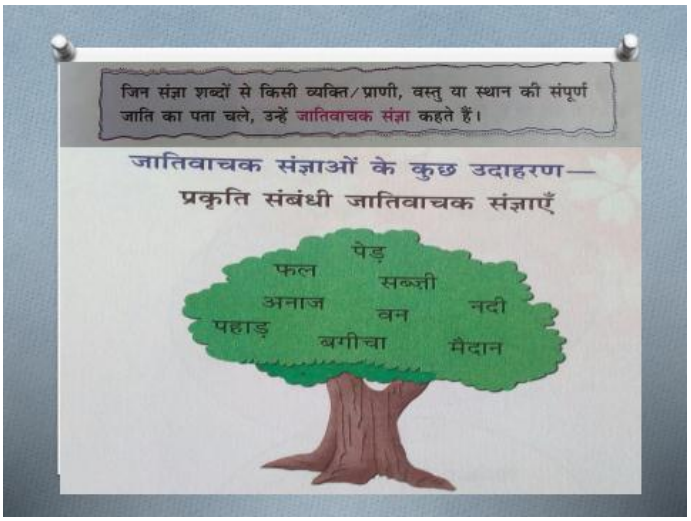
जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति/प्राणी, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति का पता चले, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जातिवाचक संज्ञाओं के कुछ उदाहरण—
प्रकृति संबंधी जातिवाचक संज्ञाएँ
पेड़
फल
सब्ज़ी
अनाज
वन
नदी
पहाड़
बगीचा
मैदान

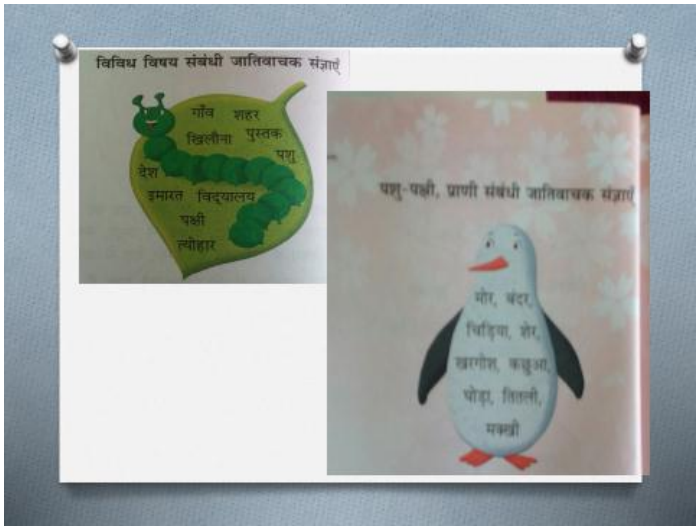
विविध विषय संबंधी जातिवाचक संज्ञाएं
गाँव
शहर
खिलौना
पुस्तक
पशु
देश
इमारत
विद्यालय
पक्षी
त्योहार
पशु-पक्षी, प्राणी संबंधी जातिवाचक संज्ञाएं
मोर, बंदर,
चिड़िया, शेर,
खरगोश, कछुआ,
घोड़ा, तितली,
मकड़ी

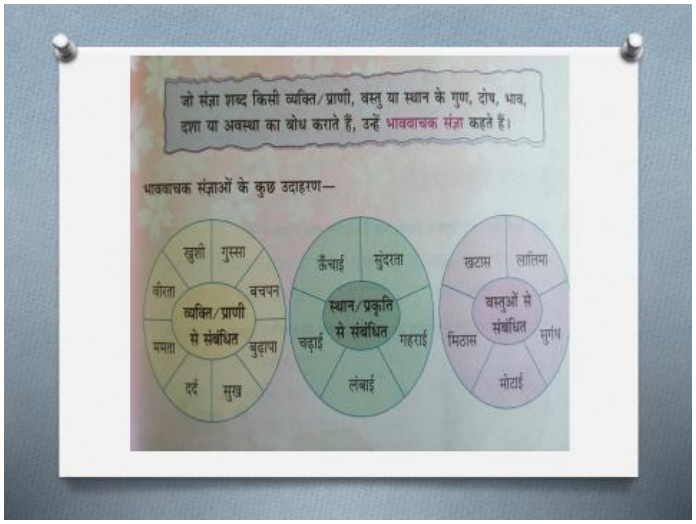
जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति/प्राणी, वस्तु या स्थान के गुण, दोष, भाव, दशा या अवस्था का बोध कराते हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
भाववाचक संज्ञाओं के कुछ उदाहरण—
व्यक्ति/प्राणी से संबंधित
खुशी
गुस्सा
बचपन
बुढ़ापा
ममता
दर्द
सुख
वीरता
स्थान/प्रकृति से संबंधित
ऊँचाई
सुंदरता
गहराई
लंबाई
चढ़ाई
वस्तुओं से संबंधित
खटास
लालिमा
मिठास
सुगंध
मोटाई

पाठ-1

प्रार्थना

आइए सीखें : ● प्रार्थना का सस्वर गायन ● सेवा, उपकार तथा बलिदान की प्रेरणा। ● समानार्थी शब्द ● शुद्ध वर्तनी का अभ्यास।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर-सेवा, पर-उपकार में हम,
निज जीवन सफल बना जाएँ ॥

हम दीन-दुखी, निबलों-विकलों
के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके, भूले-भटके,
उनको तारें, खुद तर जाएँ ॥

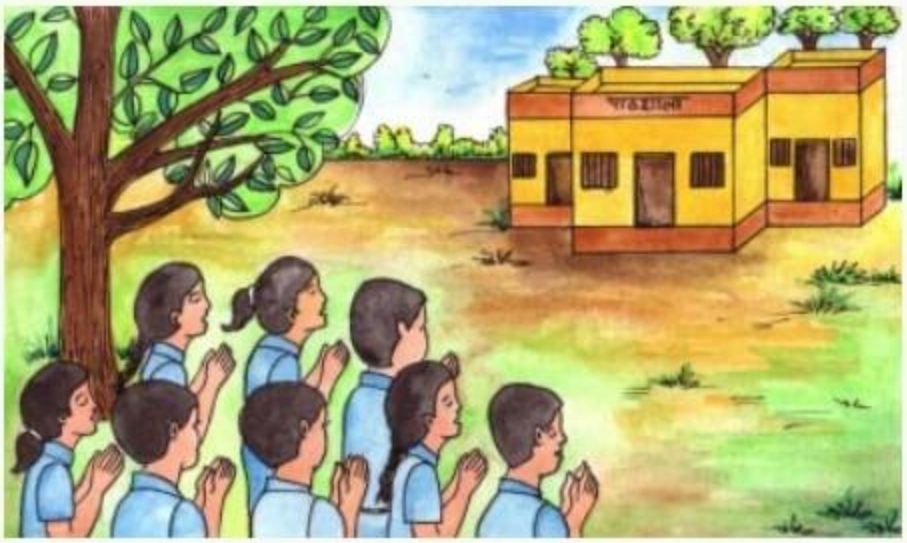

शिक्षण संकेत : ■ शिक्षक हाव-भाव के साथ कविता का सस्वर वाचन करें एवं छात्रों से भी करवाएँ। ■ कविता के कठिन शब्दार्थ एवं पंक्तियों का सरल अर्थ बच्चों को समझाएँ। ■ शिक्षक भाषा अध्ययन के प्रश्न हल करवाने में सहयोग करें।

छल, दंभ, द्वेष, पाखण्ड, झूठ,
अन्याय से निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम-सुधा रस बरसाएँ ॥

निज आन, मान, मर्यादा का,
प्रभु! ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ ॥

-मुरारीलाल बाल बंधु

शब्दार्थ

शक्ति	-	बल, सामर्थ्य	दंभ	-	घमंड
दयानिधे	-	ईश्वर, कृपा के समुद्र	पाखंड	-	झूठा, दिखावा
कर्त्तव्य	-	करने योग्य कार्य	शुचि	-	पवित्र
मार्ग	-	रास्ता	सुधा	-	अमृत
परसेवा	-	दूसरों की सेवा			

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

क. प्रार्थना में किससे शक्ति माँगी गई है?

ख. हम अपने जीवन को किस प्रकार सफल बना सकते हैं?

ग. हमें किस प्रकार के व्यक्तियों की सेवा करनी चाहिए?

घ. हमें किन-किन बातों से दूर रहना चाहिए?

ङ. इस प्रार्थना में किन-किन बातों को करने पर बल दिया गया है?